॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता — क्रम पाठः

चतुर्थकाण्डे द्वितीयः प्रश्नः

देवयजनग्रहाभिधानं

ॐ नमः परमात्मने । श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ॐ

विष्णोः क्रमः। क्रमो ऽसि। अस्यभिमातिहा। अभिमातिहा गायत्रम्। अभिमातिहेत्यभि-माति—हा। गायत्रम् छन्दः। छन्द आ। आ रोह। रोह पृथिवीम्। पृथिवीमनु। अनु वि। वि क्रमस्व। क्रमस्व निर्भक्तः। निर्भक्तः सः। निर्भक्त इति निः—भक्तः। स यम्। यम् द्विष्मः। द्विष्मो विष्णोः। विष्णोः क्रमः। क्रमोऽसि। अस्यभिशस्तिहा। अभिशस्तिहा त्रैष्टुभम्। अभि-शस्ति,हेत्यभिशस्ति—हा। त्रैष्टुभम् छन्दः। छन्द आ। आ रोह। रोहान्तरिक्षम्। अन्तरिक्ष-मनु। अनु वि। वि क्रमस्व। क्रमस्व निर्भक्तः। निर्भक्तः सः। निर्भक्त इति निः—भक्तः। स यम्। यम् द्विष्मः। द्विष्मो विष्णोः। विष्णोः क्रमः। क्रमोऽसि। अस्यरातीयतः। अरातीयतो हन्ता। हन्ता जागतम्। जागतम् छन्दः। छन्द आ। आ रोह। रोह दिवम्। दिवमनु। अनु वि। वि क्रमस्व। क्रमस्व निर्भक्तः। निर्भक्तः सः। निर्भक्त इति निः—भक्तः। स यम्। यम् द्विष्मः। द्विष्मो विष्णोः। विष्णोः क्रमः। ॥ [१] ॥ क्रमोऽसि। असि शत्रूयतः। शत्रूयतो हन्ता। शत्रूयत इति शत्रु—यतः। हन्ता ऽऽनुष्टुभम्। आनुष्टुभम् छन्दः। आनुष्टुभमित्यानु—स्तुभम्। छन्द आ। आ रोह। रोह दिशः। दिशोऽनु। अनु वि। वि क्रमस्व। क्रमस्व निर्भक्तः। निर्भक्तः सः। निर्भक्त इति निः—भक्तः। स यम्। यम् द्विष्मः। द्विष्म इति द्विष्मः॥ अक्र-न्ददग्निः। अग्निः स्तनयन्न्। स्तनयन्निव। इव द्यौः। द्यौः ख्षामा। ख्षामा रेरिहत्। रेरिहद् वीरुधः। वीरुधः समञ्जन्न्। समञ्जन्निति सम्—अञ्जन्न्॥ सद्यो जज्ञानः। जज्ञानो वि। वि हि।

ह्रीम्। ई॒मि॒द्धः। इ॒द्धो अख्य॑त्। अख्य॒दा। आ रोद॑सी। रोद॑सी भा॒नुना᳚। रोद॑सी॒ इति॒ रोद॑सी। भा॒नुना॑ भाति। भा॒त्यन्तः। अ॒न्तरित्य॒न्तः॥ अग्ने᳚ऽभ्यावर्तिन्न्। अ॒भ्या॒व॒र्ति॒न्न॒भि। अ॒भ्या॒व॒र्ति॒न्नित्य॑भि—आ॒व॒र्ति॒न्न्। अ॒भि नः॑। न॒ आ। आ व॑र्तस्व। व॒र्त॒स्वायु॑षा। आयु॑षा॒ वर्च॑सा। वर्च॑सा स॒न्या। स॒न्या मे॒धया᳚। मे॒धया᳚ प्र॒जया᳚। प्र॒जया॒ धने॑न। प्र॒जयेति॑ प्र—जया᳚। धने॒नेति॒ धने॑न॥ अग्ने॑ अङ्गिरः। ॥ [२] ॥ अ॒ङ्गि॒रः॒ श॒तम्। श॒तम् ते᳚। ते स॒न्तु। स॒न्त्वावृ॑तः। आवृ॑तः स॒हस्र॑म्। आवृ॑त॒ इत्या᳚—वृ॑तः। स॒हस्र॑म् ते। त॒ उ॒पावृ॑तः। उ॒पावृ॑त॒ इत्यु॑प—आ॒वृ॑तः॥ तासा॒म् पोष॑स्य। पोष॑स्य॒ पोषे॑ण। पोषे॑ण॒ पुनः॑। पुन॑र् नः। नो॒ न॒ष्टम्। न॒ष्टमा। आ कृ॑धि। कृ॒धि॒ पुनः॑। पुन॑र् नः। नो॒ र॒यिम्। र॒यिमा। आ कृ॑धि। कृ॒धीति॑ कृधि॥ पुन॑रू॒र्जा। ऊ॒र्जा नि। नि व॑र्तस्व। व॒र्त॒स्व पुनः॑। पुन॑रग्ने। अ॒ग्न॒ इ॒षा। इ॒षाऽऽयु॑षा। आयु॒षेत्यायु॑षा॥ पुन॑र् नः। नः॒ पा॒हि। पा॒हि॒ वि॒श्वतः॑। वि॒श्वत॒ इति॑ वि॒श्वतः॑॥ स॒ह र॒य्या। र॒य्या नि। नि व॑र्तस्व। व॒र्त॒स्वाग्ने᳚। अग्ने॒ पिन्व॑स्व। पिन्व॑स्व धार॑या। धार॒येति॒ धार॑या॥ वि॒श्वफ्स्नि॑या वि॒श्वतः॑। वि॒श्वफ्स्नि॒येति॑ वि॒श्व—फ्स्नि॒या। वि॒श्वत॒स्परि॑। परीति॒ परि॑॥ उदु॑त्त॒मम्। उ॒त्त॒मँ॑व्वँरुण। उ॒त्त॒ममित्यु॑त्—त॒मम्। व॒रु॒ण॒ पाश᳚म्। पाश॑म॒स्मत्। अ॒स्मद॑व। अवा॑ध॒मम्। अ॒ध॒माँ॑व्वि। ॥ [३] ॥ वि म॑द्ध्य॒मम्। म॒द्ध्य॒मꣳ॑ श्र॑थाय। श्र॒था॒येति॑ श्रथाय॥ अथा॑ व॒यम्। व॒यमा॑दित्य। आ॒दि॒त्य॒ व्र॒ते। व्र॒ते तव॑। तवाना॑गसः। अना॑गसो॒ अदि॑तये। अदि॑तये स्याम। स्यामेति॑ स्याम॥ आ त्वा᳚। त्वाऽहा॒र्॒षम्। आ॒हा॒र्॒षम॒न्तः। अ॒न्तर॑भूः। अभू॒र् ध्रुवः। ध्रुवस्ति॑ष्ठ। ति॒ष्ठावि॑चाचलिः। अवि॑चाचलि॒रित्यवि॑—चा॒च॒लिः॥ विश॑स्त्वा। त्वा॒ सर्वाः॑। सर्वा॑ वाञ्छन्तु। वा॒ञ्छ॒न्त्व॒स्मिन्न्। अ॒स्मिन् रा॒ष्ट्रम्। रा॒ष्ट्रमधि॑। अधि॑ श्रय। श्र॒येति॑ श्रय॥ अग्ने॑ बृ॒हन्न्। बृ॒हन्नु॒षसा॑म्। उ॒षसा॑मू॒द्ध्वः। ऊ॒द्ध्वो अ॑स्थात्। अ॒स्था॒न् नि॒र्ज॒ग्मि॒वान्। नि॒र्ज॒ग्मि॒वान् तम॑सः। नि॒र्ज॒ग्मि॒वानिति॑ निः—ज॒ग्मि॒वान्। तम॑सो॒ ज्योति॑षा। ज्योति॒षा। आऽगा᳚त्। अ॒गा॒दि॒त्य॑गात्॥ अ॒ग्निर् भा॒नुना᳚। भा॒नुना॒ रुश॑ता। रुश॑ता॒ स्वङ्गः॑। स्व॒ङ्ग॒ आ। स्व॒ङ्ग॒ इति॑ सु—अ॒ङ्गः। आ जा॒तः। जा॒तो विश्वा᳚। विश्वा॒ सद्मा॑नि। सद्मा॒न्यप्राः। अ॒प्रा इत्य॑प्राः॥ सीद॒ त्वम्। त्वम् मा॒तुः। मा॒तुर॒स्याः। अ॒स्या उ॒पस्थे᳚। ॥ [४] ॥ उ॒पस्थे॒ विश्वा॑नि। उ॒पस्थ॒ इत्यु॒प—स्थे। विश्वा᳚न्यग्ने। अग्ने॒ व॒युना॑नि। व॒युना॑नि वि॒द्वान्। वि॒द्वानिति॑ वि॒द्वान्॥ मैना᳚म्। ए॒नाम॒र्चिषा᳚। अ॒र्चिषा॒ मा। मा तप॑सा। तप॑साऽभि। अ॒भि शू॒शुचः। शू॒शु॒चोऽन्तः। अ॒न्तर॑स्याम्। अ॒स्या॒ꣳ॒

शुक्रज्योतिः। शुक्रज्योतिर् वि। शुक्रज्योतिरिति शुक्र—ज्योतिः। वि भाहि। भाहीति भाहि॥ अन्तरग्ने। अग्ने रुचा। रुचा त्वम्। त्वमुखायै। उखायै सदने। सदने स्वे। स्व इति स्वे॥ तस्यास्त्वम्। त्वꣳ हरसा। हरसा तपन्न्। तपन् जातवेदः। जातवेदः शिवः। जातवेद इति जात—वेदः। शिवो भव। भवेति भव॥ शिवो भूत्वा। भूत्वा मह्यम्। मह्यमग्ने। अग्नेऽथो। अथो सीद। अथो इत्यथो। सीद शिवः। शिवस्त्वम्। त्वमिति त्वम्॥ शिवाः कृत्वा। कृत्वा दिशः। दिशः सर्वाः। सर्वाः स्वाम्। स्वाय्ँयोनिम्। योनिमिह। इहा। आऽसदः। असद इत्यसदः॥ हꣳसः शुचिषत्। शुचिषद् वसुः। शुचिषदिति शुचि—सत्। वसुरन्तरिख्षसत्। अन्तरिख्षसद्धोता। अन्तरिख्षसदित्यन्तरिख्ष—सत्। होता वेदिषत्। वेदिषदतिथिः। वेदिषदिति वेदि—सत्। अतिथिर् दुरोणसत्। दुरोणसदिति दुरोण—सत्॥ नृषद् वरसत्। नृषदिति नृ—सत्। वरसदृतसत्। वरसदिति वर—सत्। ऋतसद् व्योमसत्। ऋतसदित्यृत—सत्। व्योमसदब्जाः। व्योमसदिति व्योम—सत्। अब्जा गोजाः। अब्जा इत्यप्—जाः। गोजा ऋतजाः। गोजा इति गो—जाः। ऋतजा अद्रिजाः। ऋतजा इत्यृत—जाः। अद्रिजा ऋतम्। अद्रिजा इत्यद्रि—जाः। ऋतम् बृहत्। बृहदिति बृहत्॥ ॥ [५] ॥

(दिवमनु वि क्रमस्व निर्भक्तः स यन् द्विष्मो विष्णो र्द्धनेनाग्ने ऽधम मस्याः शुचिषथ् षोडश च) ॥ १ ॥

दिवस्परि। परि प्रथमम्। प्रथमम् जज्ञे। जज्ञे अग्निः। अग्निरस्मत्। अस्मद् द्वितीयम्। द्वितीयम् परि। परि जातवेदाः। जातवेदा इति जात—वेदाः॥ तृतीयमप्सु। अप्सु नृमणाः। अप्स्वित्यप्—सु। नृमणा अजस्रम्। नृमणा इति नृ—मनाः। अजस्रमिन्धानः। इन्धान एनम्। एनम् जरते। जरते स्वाधीः। स्वाधीरिति स्व—धीः॥ विद्मा ते। ते अग्ने। अग्ने त्रेधा। त्रेधा त्रयाणि। त्रयाणि विद्म। विद्मा ते। ते सद्म। सद्म विभृतम्। विभृतम् पुरुत्रा। विभृतमिति वि—भृतम्। पुरुत्रेति पुरु—त्रा॥ विद्मा ते। ते नाम। नाम परमम्। परमम् गुहा। गुहा यत्। यद् विद्म। विद्मा तम्। तमुथ्सम्। उथ्सय्ँयतः। यत आजगन्थ। आजगन्थेत्या—जगन्थ॥ समुद्रे त्वा। त्वा नृमणाः। नृमणा अप्सु। नृमणा इति नृ—मनाः। अप्स्वन्तः। अप्स्वित्यप्—सु। अन्तर् नृचख्षाः। नृचख्षा ईधे। नृचख्षा इति नृ—चख्षाः। ईधे दिवः। दिवो अग्ने।

अग्न ऊर्धन्न्। ऊधन्नित्यूर्धन्न्॥ तृतीये त्वा। त्वा रजसि। ॥ [६] ॥ रजसि तस्थिवाꣳसम्। तस्थिवाꣳसमृतस्य। ऋतस्य योनौ। योनौ महिषाः। महिषा अहिन्वन्न्। अहिन्वन्नित्यहिन्वन्न्॥ अक्रन्ददग्निः। अग्निः स्तनयन्न्। स्तनयन्निव। इव द्यौः। द्यौः क्षाम। क्षामा रेरिहत्। रेरिहद् वीरुधः। वीरुधः समञ्जन्न्। समञ्जन्निति सम्—अञ्जन्न्॥ सद्यो जज्ञानः। जज्ञानो वि। वि हि। हीम्। ईमिद्धः। इद्धो अख्यत्। अख्यदा। आ रोदसी। रोदसी भानुना। रोदसी इति रोदसी। भानुना भाति। भात्यन्तः। अन्तरित्यन्तः॥ उशिक् पावकः। पावको अरतिः। अरतिः सुमेधाः। सुमेधा मर्तेषु। सुमेधा इति सु—मेधाः। मर्तेष्वग्निः। अग्निरमृतः। अमृतो नि। नि धायि। धायीति धायि॥ इयर्ति धूमम्। धूममरुषम्। अरुषं भरिभ्रत्। भरिभ्रदुत्। उच्छुक्रेण। शुक्रेण शोचिषा। शोचिषा द्याम्। द्यामिनक्षत्। इनक्षदितीनक्षत्॥ विश्वस्य केतुः। केतुर् भुवनस्य। भुवनस्य गर्भः। गर्भ आ। आ रोदसी। ॥ [७] ॥ रोदसी अपृणात्। रोदसी इति रोदसी। अपृणाज् जायमानः। जायमान इति जायमानः॥ वीडुम् चित्। चिदद्रिम्। अद्रिमभिनत्। अभिनत् परायन्न्। परायन् जनाः। परायन्निति परा—यन्न्। जना यत्। यदग्निम्। अग्निमयजन्त। अयजन्त पञ्च। पञ्चेति पञ्च॥ श्रीणामुदारः। उदारो धरुणः। धरुणो रयीणाम्। रयीणाम् मनीषाणाम्। मनीषाणाम् प्रार्पणः। प्रार्पणः सोमगोपाः। प्रार्पण इति प्र—अर्पणः। सोमगोपा इति सोम—गोपाः॥ वसोः सूनुः। सूनुः सहसः। सहसो अप्सु। अप्सु राजा। अप्स्वित्यप्—सु। राजा वि। वि भाति। भात्यग्रे। अग्र उषसाम्। उषसामिधानः। इधान इतीधानः॥ यस्ते। ते अद्य। अद्य कृणवत्। कृणवद् भद्रशोचे। भद्रशोचेऽपूपम्। भद्रशोच इति भद्र—शोचे। अपूपम् देव। देव घृतवन्तम्। घृतवन्तमग्ने। घृतवन्तमिति घृत—वन्तम्। अग्न इत्यग्ने॥ प्र तम्। तम् नय। नय प्रतराम्। प्रतराँव्वस्यः। प्रतरामिति प्र—तराम्। वस्यो अच्छ। अच्छाभि। अभि द्युम्नम्। द्युम्नम् देवभक्तम्। देवभक्तय्ँयविष्ठ। देवभक्तमिति देव—भक्तम्। यविष्ठेति यविष्ठ॥ आ तम्। ॥ [८] ॥ तम् भज। भज सौश्रवसेषु। सौश्रवसेष्वग्ने। अग्न उक्थउक्थे। उक्थ,उक्थ आ। उक्थ,उक्थ इत्युक्थे—उक्थे। आ भज। भज शस्यमाने। शस्यमान इति शस्यमाने॥ प्रियः सूर्ये। सूर्ये प्रियः। प्रियो अग्ना। अग्ना भवाति। भवात्युत्। उज् जातेन। जातेन भिनदत्। भिनददुत्। उज् जनित्वैः। जनित्वैरिति जनित्वैः॥ त्वामग्ने।

अग्ने यजमानाः। यजमाना अनु। अनु द्यून्। द्यूनविश्वाः। विश्वा वसूनि। वसूनि दधिरे। दधिरे वार्याणि। वार्याणीति वार्याणि॥ त्वया सह। सह द्रविणम्। द्रविणमिच्छमानाः। इच्छमाना व्रजम्। व्रजम् गोमन्तम्। गोमन्तमुशिजः। गोमन्तमिति गो—मन्तम्। उशिजो वि। वि वव्रुः। वव्रुरिति वव्रुः॥ दृशानो रुक्मः। रुक्म उर्व्या। उर्व्या वि। व्यद्यौत्। अद्यौद् दुर्मर्षम्। दुर्मर्षमायुः। दुर्मर्षमिति दुः—मर्षम्। आयुः श्रिये। श्रिये रुचानः। रुचान इति रुचानः॥ अग्निरमृतः। अमृतो अभवत्। अभवद् वयोभिः। वयोभिर् यत्। वयोभिरितिवयः—भिः। यदेनम्। एनम् द्यौः। द्यौरजनयत्। अजनयथ् सुरेताः। सुरेता इति सु—रेताः॥ ॥ [९] ॥

(तृतिये त्वा गर्भ आ यविष्ठाऽऽ य च्चत्वारि च) ॥ २ ॥

अन्नपते ऽन्नस्य। अन्नपत इत्यन्न—पते। अन्नस्य नः। नो देहि। देह्यनमीवस्य। अनमीवस्य शुष्मिणः। शुष्मिण इति शुष्मिणः॥ प्र प्रदातारम्। प्रदातारम् तारिषः। प्रदातारमिति प्र—दातारम्। तारिष ऊर्जम्। ऊर्जम् नः। नो धेहि। धेहि द्विपदे। द्विपदे चतुष्पदे। द्विपद इति द्वि—पदे। चतुष्पद इति चतुः—पदे॥ उदु। उ त्वा। त्वा विश्वे। विश्वे देवाः। देवा अग्ने। अग्ने भरन्तु। भरन्तु चित्तिभिः। चित्तिभिरिति चित्ति—भिः॥ स नः। नो भव। भव शिवतमः। शिवतमः सुप्रतीकः। शिवतम इति शिव—तमः। सुप्रतीको विभावसुः। सुप्रतीक इति सु—प्रतीकः। विभावसुरिति विभा—वसुः॥ प्रेत्। इदग्ने। अग्ने ज्योतिष्मान्। ज्योतिष्मान्याहि। याहि शिवेभिः। शिवेभिरर्चिभिः। अर्चिभिस्त्वम्। अर्चिभिरित्यर्चि—भिः। त्वमिति त्वम्॥ बृहद्भिर् भानुभिः। बृहद्भिरिति बृहत्—भिः। भानुभिर् भासन्न्। भानुभिरितिभानु—भिः। भासन् मा। मा हिꣳसीः। हिꣳसीस्तनुवा। तनुवा प्रजाः। प्रजा इति प्र—जाः॥ समिधाऽग्निम्। समिधेति सम्—इधा। अग्निम् दुवस्यत। दुवस्यत घृतैः। घृतैर् बोधयत। बोधयतातिथिम्। अतिथिमित्यतिथिम्॥ आ ऽस्मिन्न्। ॥ [१०] ॥ अस्मिन्न्हव्या। हव्या जुहोतन। जुहोतनेति जुहोतन॥ प्रप्रायम्। प्रप्रेति प्र—प्र। अयमग्निः। अग्निर् भरतस्य। भरतस्य शृण्वे। शृण्वे वि। वि यत्। यथ् सूर्यः। सूर्यो न। न रोचते। रोचते बृहत्। बृहद् भाः। भा इति भाः॥ अभि यः। यः पूरुम्। पूरुम् पृतनासु। पृतनासु तस्थौ। तस्थौ दीदाय। दीदाय दैव्यः। दैव्यो अतिथिः। अतिथिः शिवः। शिवो नः।

न इति नः॥ आपो देवीः। देवीः प्रति। प्रति गृह्णीत। गृह्णीत भस्म। भस्मैतत्। एतथ् स्योने। स्योने कृणुद्ध्वम्। कृणुद्ध्वꣳ सुरभौ। सुरभावु। उ लोके। लोक इति लोके॥ तस्मै नमन्ताम्। नमन्ताम् जनयः। जनयः सुपत्नीः। सुपत्नीर् माता। सुपत्नीरिति सु—पत्नीः। मातेव। इव पुत्रम्। पुत्रम् बिभृत। बिभृता सु। स्वेनम्। एनमित्येनम्॥ अफ्स्वग्ने। अफ्स्वित्यप्—सु। अग्ने सधिः। सधिष्टव। तव सः। ॥ [११] ॥ सौषधीः। ओषधीरनु। अनु रुद्ध्यसे। रुद्ध्यस इति रुद्ध्यसे॥ गर्भे सन्न्। सन् जायसे। जायसे पुनः। पुनरिति पुनः॥ गर्भो असि। अस्योषधीनाम्। ओषधीनाम् गर्भः। गर्भो वनस्पतीनाम्। वनस्पतीनामिति वनस्पतीनाम्॥ गर्भो विश्वस्य। विश्वस्य भूतस्य। भूतस्याग्ने। अग्ने गर्भः। गर्भो अपाम्। अपामसि। असीत्यसि॥ प्रसद्य भस्मना। प्रसद्येति प्र—सद्य। भस्मना योनिम्। योनिमपः। अपश्च। च पृथिवीम्। पृथिवीमग्ने। अग्न इत्यग्ने॥ सꣳसृज्य मातृभिः। सꣳसृज्येति सम्—सृज्य। मातृभिस्त्वम्। मातृभिरिति मातृ—भिः। त्वम् ज्योतिष्मान्। ज्योतिष्मान् पुनः। पुनरा। आऽसदः। असद् इत्यसदः॥ पुनरासद्य। आसद्य सदनम्। आसद्येत्या—सद्य। सदनमपः। अपश्च। च पृथिवीम्। पृथिवीमग्ने। अग्न इत्यग्ने॥ शेषे मातुः। मातुर् यथा। यथोपस्थे। उपस्थेऽन्तः। उपस्थ इत्युप—स्थे। अन्तरस्याम्। अस्याꣳ शिवतमः। शिवतम इति शिव—तमः॥ पुनरूर्जा। ऊर्जा नि। ॥ [१२] ॥ नि वर्तस्व। वर्तस्व पुनः। पुनरग्ने। अग्न इषा। इषाऽऽयुषा। आयुषेत्यायुषा॥ पुनर् नः। नः पाहि। पाहि विश्वतः। विश्वत इति विश्वतः॥ सह रय्या। रय्या नि। नि वर्तस्व। वर्तस्वाग्ने। अग्ने पिन्वस्व। पिन्वस्व धारया। धारयेति धारया॥ विश्वफ्स्निया विश्वतः। विश्वफ्स्नियेति विश्व—फ्स्निया। विश्वतस्परि। परीति परि॥ पुनस्त्वा। त्वा ऽऽदित्याः। आदित्या रुद्राः। रुद्रा वसवः। वसवः सम्। समिन्धताम्। इन्धताम् पुनः। पुनर् ब्रह्माणः। ब्रह्माणो वसुनीथ। वसुनीथ यज्ञैः। वसुनीथेति वसु—नीथ। यज्ञैरिति यज्ञैः॥ घृतेन त्वम्। त्वम् तनुवः। तनुवो वर्द्धयस्व। वर्द्धयस्व सत्याः। सत्याः सन्तु। सन्तु यजमानस्य। यजमानस्य कामाः। कामा इति कामाः॥ बोधा नः। नो अस्य। अस्य वचसः। वचसो यविष्ठ। यविष्ठ मꣳहिष्ठस्य। मꣳहिष्ठस्य प्रभृतस्य। प्रभृतस्य स्वधावः। प्रभृतस्येति प्र—भृतस्य। स्वधाव इति स्वधा—वः॥ पीयति त्वः। त्वो अनु। अनु त्वः। त्वो गृणाति। गृणाति वन्दारुः। वन्दारुस्ते। ते तनुवम्। तनुवव्वँन्दे। वन्दे अग्ने। अग्न इत्यग्ने॥

स बोधि। बोधि सूरिः। सूरिर् मघवा। मघवा वसुदावा। मघवेति मघ—वा। वसुदावा वसुपतिः। वसुदावेति वसु—दावा। वसुपतिरिति वसु—पतिः॥ युयोद्ध्यस्मत्। अस्मद् द्वेषांसि। द्वेषांसीति द्वेषांसि॥ ॥ [१३] ॥

(आ तवो जाऽ नु षोडश च) ॥ ३ ॥

अपेत। इत वि। वीत। इत वि। वि च। च सर्पत। सर्पतातः। अतो ये। येऽत्र। अत्र स्थ। स्थ पुराणाः। पुराणा ये। ये च। च नूतनाः। नूतना इति नूतनाः॥ अदादिदम्। इदय्ँयमः। यमोऽवसानम्। अवसानम् पृथिव्याः। अवसानमित्यव—सानम्। पृथिव्या अक्रन्न्। अक्रन्निमम्। इमम् पितरः। पितरो लोकम्। लोकमस्मै। अस्मा इत्यस्मै॥ अग्नेर् भस्म। भस्मासि। अस्यग्नेः। अग्नेः पुरीषम्। पुरीषमसि। असि सम्(२)ज्ञानम्। सम्(२)ज्ञानमसि। सम्(२)ज्ञानमिति सम्—ज्ञानम्। असि कामधरणम्। कामधरणम् मयि। कामधरणमिति काम—धरणम्। मयि ते। ते कामधरणम्। कामधरणम् भूयात्। कामधरणमिति काम—धरणम्। भूयादिति भूयात्॥ सय्ँया। या वः। वः प्रियाः। प्रियास्तनुवः। तनुवः सम्। सम् प्रिया। प्रिया हृदयानि। हृदयानि वः। व इति वः॥ आत्मा वः। वो अस्तु। अस्तु सम्प्रियः। ॥ [१४] ॥ सम्प्रियः सम्प्रियाः। सम्प्रिय इति सम्—प्रियः। सम्प्रियास्तनुवः। सम्प्रिया इति सम्—प्रियाः। तनुवो मम। ममेति मम॥ अयꣳ सः। सो अग्निः। अग्निर् यस्मिन्न्। यस्मिन्थ् सोमम्। सोममिन्द्रः। इन्द्रः सुतम्। सुतम् दधे। दधे जठरे। जठरे वावशानः। वावशान इति वावशानः॥ सहस्रियव्ँवाजम्। वाजमत्यम्। अत्यम् न। न सप्तिम्। सप्तिꣳ ससवान्। ससवान्थ् सन्न्। ससवानिति स—सवान्। सन्थ् स्तूयसे। स्तूयसे जातवेदः। जातवेद इति जात—वेदः॥ अग्ने दिवः। दिवो अर्णम्। अर्णमच्छ। अच्छा जिगासि। जिगास्यच्छ। अच्छा देवान्। देवाꣳ ऊचिषे। ऊचिषे धिष्णियाः। धिष्णिया ये। य इति ये॥ याः परस्तात्। परस्ताद् रोचने। रोचने सूर्यस्य। सूर्यस्य याः। याश्च। चावस्तात्। अवस्तादुपतिष्ठन्ते। उपतिष्ठन्त आपः। उपतिष्ठन्त इत्युप—तिष्ठन्ते। आप इत्यापः॥ अग्ने यत्। यत् ते। ते दिवि। दिवि वर्चः। वर्चः पृथिव्याम्। पृथिव्याय्ँयत्। यदोषधीषु। ओषधीष्वप्सु। ॥ [१५] ॥ अप्सु वा। अप्स्वित्यप्—सु। वा यजत्र।

यजत्रेति यजत्र॥ येनान्तरिख्षम्। अन्तरिख्षमुरु। उर्वाततन्थ। आततन्थ त्वेषः। आतत-न्थेत्या—ततन्थ। त्वेषः सः। स भानुः। भानुरर्णवः। अर्णवो नृचख्षाः। नृचख्षा इति नृ—चख्षाः॥ पुरीष्यासो अग्नयः। अग्नयः प्रावणेभिः। प्रावणेभिः सजोषसः। प्रावणेभिरिति प्र—वनेभिः। सजोषस इति स—जोषसः॥ जुषन्ताꣳ हव्यम्। हव्यमाहुतम्। आहुतमनमीवाः। आहुतमित्या—हुतम्। अनमीवा इषः। इषो महीः। महीरिति महीः॥ इडामग्ने। अग्ने पुरु-दꣳसम्। पुरुदꣳसꣳ सनिम्। पुरुदꣳसमिति पुरु—दꣳसम्। सनिम् गोः। गोः शश्वत्तमम्। शश्वत्तमꣳ हवमानाय। शश्वत्तममिति शश्वत्—तमम्। हवमानाय साध। साधेति साध॥ स्यान् नः। नः सूनुः। सूनुस्तनयः। तनयो विजावा। विजावाऽग्ने। विजावेति वि—जावा। अग्ने सा। सा ते। ते सुमतिः। सुमतिर् भूतु। सुमतिरिति सु—मतिः। भूत्वस्मे। अस्मे इत्यस्मे॥ अयम् ते। ते योनिः। योनिरृत्वियः। ऋत्वियो यतः। यतो जातः। जातो अरोचथाः। अरोचथा इत्यरोचथाः॥ तम् जानन्न्। जानन्नग्ने। ॥ [१६] ॥ अग्न आ। आ रोह। रोहाथ। अथा नः। नो वर्द्धय। वर्द्धया रयिम्। रयिमिति रयिम्॥ चिदसि। असि तया। तया देवतया। देवतया ऽङ्गिरस्वत्। अङ्गिरस्वद् ध्रुवा। ध्रुवा सीद। सीद परिचित्। परिचिदसि। परिचिदिति परि—चित्। असि तया। तया देवतया। देवतया ऽङ्गिरस्वत्। अङ्गिरस्वद् ध्रुवा। ध्रुवा सीद। सीद लोकम्। लोकम् पृण। पृण छिद्रम्। छिद्रम् पृण। पृणाथो। अथो सीद। अथो इत्यथो। सीद शिवा। शिवा त्वम्। त्वमिति त्वम्॥ इन्द्राग्नी त्वा। इन्द्राग्नी इतीन्द्र—अग्नी। त्वा बृहस्पतिः। बृहस्पतिरस्मिन्न्। अस्मिन्योनौ। योनावसीषदन्न्। असीषदन्नित्यसीषदन्न्॥ ता अस्य। अस्य सूददोहसः। सूददोहसः सोमम्। सूददोहस इति सूद—दोहसः। सोमꣳ श्रीणन्ति। श्रीणन्ति पृश्नयः। पृश्नय इति पृश्नयः॥ जन्मन् देवानाम्। देवानाव्विशः। विशस्त्रिषु। त्रिष्वा। आ रोचने। रोचने दिवः। दिव इति दिवः॥ ॥ [१७] ॥

(अस्त्वो षधीषु जान न्नष्टाचत्वारिꣳशच्च) ॥ ४ ॥

समितम्। इतꣳ सम्। सम् कल्पेथाम्। कल्पेथाꣳ सम्प्रियौ। सम्प्रियौ रोचिष्णू। सम्प्रिया-विति सम्—प्रियौ। रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। रोचिष्णू इति रोचिष्णू। सुमनस्यमानाविति सु—

मनस्यमानौ॥ इषमूर्जम्। ऊर्जमभि। अभि सव्ँवसानौ। सव्ँवसानौ सम्। सव्ँवसानाविति सम्—वसानौ। सव्ँवाम्। वाम् मनाꣳसि। मनाꣳसि सम्। सवँव्रता। व्रता सम्। समु। उ चित्तानि। चित्तान्या। आऽकरम्। अकरमित्यकरम्॥ अग्ने पुरीष्य। पुरीष्याधिपाः। अधिपा भव। अधिपा इत्यधि—पाः। भवा त्वम्। त्वम् नः। न इति नः॥ इषमूर्जम्। ऊर्जय्ँयजमानाय। यजमानाय धेहि। धेहीति धेहि॥ पुरीष्यस्त्वम्। त्वमग्ने। अग्ने रयिमान्। रयिमान् पुष्टिमान्। रयिमानिति रयि—मान्। पुष्टिमाꣳ असि। पुष्टिमानिति पुष्टि—मान्। असीत्यसि॥ शिवाः कृत्वा। कृत्वा दिशः। दिशः सर्वाः। सर्वाः स्वाम्। स्वाय्ँयोनिम्। योनिमिह। इहा। आऽसदः। असद इत्य-सदः॥ भवतम् नः। नः समनसौ। समनसौ समोकसौ। समनसाविति स—मनसौ। समो-कसावरेपसौ। समोकसाविति सम्—ओकसौ। ॥ [१८] ॥ अरेपसावित्यरेपसौ॥ मा यज्ञम्। यज्ञꣳ हिꣳसिष्टम्। हिꣳसिष्टम् मा। मा यज्ञपतिम्। यज्ञपतिम् जातवेदसौ। यज्ञपतिमिति यज्ञ—पतिम्। जातवेदसौ शिवौ। जातवेदसाविति जात—वेदसौ। शिवौ भवतम्। भवतमद्य। अद्य नः। न इति नः॥ मातेव। इव पुत्रम्। पुत्रम् पृथिवी। पृथिवी पुरीष्यम्। पुरीष्यमग्निम्। अग्निꣳ स्वे। स्वे योनौ। योनावभाः। अभारुखा। उखेत्युखा॥ ताव्ँविश्वैः। विश्वैर् देवैः। देवैरृ-तुभिः। ऋतुभिः सव्ँविदानः। ऋतुभिरित्यृतु—भिः। सव्ँविदानः प्रजापतिः। सव्ँविदान इति सम्—विदानः। प्रजापतिर् विश्वकर्मा। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। विश्वकर्मा वि। विश्वकर्मेति विश्व—कर्मा। वि मुञ्चतु। मुञ्चत्विति मुञ्चतु॥ यदस्य। अस्य पारे। पारे रजसः। रजसः शुक्रम्। शुक्रम् ज्योतिः। ज्योतिरजायत। अजायतेत्यजायत॥ तम् नः। नः पर्षत्। पर्षदति। अति द्विषः। द्विषोऽग्ने। अग्ने वैश्वानर। वैश्वानर स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ नमः सु। सु ते। ते निरृते। निरृते विश्वरूपे। निरृत इति निः—ऋते। विश्वरूपेऽयस्मयम्। विश्वरूप इति विश्व—रूपे। ॥ [१९] ॥ अयस्मयव्ँवि। वि चृत। चृता बन्धम्। बन्धमेतम्। एतमित्येतम्॥ यमेन त्वम्। त्वय्ँयम्या। यम्या सव्ँविदाना। सव्ँविदानोत्तमम्। सव्ँविदानेति सम्—विदाना। उत्तमम् नाकम्। उत्तममित्युत्—तमम्। नाकमधि। अधि रोहय। रोहयेमम्। इममितीमम्॥ यत् ते। ते देवी। देवी निरृतिः। निरृतिराबबन्ध। निरृतिरिति निः—ऋतिः। आबबन्ध दाम। आबबन्धेत्या—बबन्ध। दाम ग्रीवासु। ग्रीवास्वविचर्त्यम्। अविचर्त्यमित्यवि—चर्त्यम्॥

इदम् ते। ते तत्। तद् वि। वि ष्यामि। स्याम्यायुषः। आयुषो न। न मद्ध्यात्। मद्ध्यादथ। अथा जीवः। जीवः पितुम्। पितुमद्धि। अद्धि प्रमुक्तः। प्रमुक्त इति प्र—मुक्तः॥ यस्यास्ते। ते अस्याः। अस्याः क्रूरे। क्रूर आसन्न्। आसन् जुहोमि। जुहोम्येषाम्। एषाम् बन्धानाम्। बन्धानामवसर्जनाय। अवसर्जनायेत्यव—सर्जनाय॥ भूमिरिति। इति त्वा। त्वा जनाः। जना-विदुः। विदुर् निरृतिः। निरृतिरिति। निरृतिरिति निः—ऋतिः। ॥ [२०] ॥ इति त्वा। त्वाऽहम्। अहम् परि। परि वेद। वेद विश्वतः। विश्वत इति विश्वतः॥ असुन्वन्तमयज-मानम्। अयजमानमिच्छ। इच्छ स्तेनस्य। स्तेनस्येत्याम्। इत्याम् तस्करस्य। तस्करस्यानु। अन्वेषि। एषीत्येषि॥ अन्यमस्मत्। अस्मदिच्छ। इच्छ सा। सा ते। त इत्या। इत्या नमः। नमो देवि। देवि निरृते। निरृते तुभ्यम्। निरृत इति निः—ऋते। तुभ्यमस्तु। अस्त्वि-त्यस्तु॥ देवीमहम्। अहम् निरृतिम्। निरृतिव्वँन्दमानः। निरृतिमिति निः—ऋतिम्। वन्दमानः पिता। पितेव। इव पुत्रम्। पुत्रम् दसये। दसये वचोभिः। वचोभिरिति वचः—भिः॥ विश्वस्य या। या जायमानस्य। जायमानस्य वेद। वेद शिरश्शिरः। शिरश्शिरः प्रति। शिरश्शिर इति शिरः—शिरः। प्रति सूरी। सूरी वि। वि चष्टे। चष्ट इति चष्टे॥ निवेशनः सङ्गमनः। निवेशन इति नि—वेशनः। सङ्गमनो वसूनाम्। सङ्गमन इति सम्—गमनः। वसूनाव्विँश्वा। विश्वा रूपा। रूपाऽभि। अभि चष्टे। चष्टे शचीभिः। ॥ [२१] ॥ शचीभि-रिति शचि—भिः॥ देव इव। इव सविता। सविता सत्यधर्मा। सत्यधर्मेन्द्रः। सत्यधर्मेति सत्य—धर्मा। इन्द्रो न। न तस्थौ। तस्थौ समरे। समरे पथीनाम्। समर इति सम्—अरे। पथीनामिति पथीनाम्॥ सव्वँरत्राः। वरत्रा दधातन। दधातन निः। निराहावान्। आहावान् कृणोतन। आहावानित्या—हावान्। कृणोतनेति कृणोतन॥ सिञ्चामहा अवटम्। अवटमु-द्रिणम्। उद्रिणव्वँयम्। वयव्विँश्वा। विश्वाऽहा। अहाऽदस्तम्। अदस्तमक्षितम्। अक्षितमि-त्यक्षितम्॥ निष्कृताहावमवटम्। निष्कृताहावमिति निष्कृत—आहावम्। अवटꣳ सुवरत्रम्। सुवरत्रꣳ सुषेचनम्। सुवरत्रमिति सु—वरत्रम्। सुषेचनमिति सु—सेचनम्॥ उद्रिणꣳ सिञ्चे। सिञ्चे अक्षितम्। अक्षितमित्यक्षितम्॥ सीरा युञ्जन्ति। युञ्जन्ति कवयः। कवयो युगा। युगा वि। वि तन्वते। तन्वते पृथक्। पृथगिति पृथक्॥ धीरा देवेषु। देवेषु सुम्नया। सुम्नयेति

सुम्नया॥ युनक्त सीरा᳚। सीरा वि। वि युगा। युगा तनोत। तनोत कृते। कृते योनौ᳚। योनौ वपत। वपतेह। इह बीजम्᳚। ॥ [२२] ॥ बीजमिति बीजम्᳚॥ गिरा च। च श्रुष्टिः। श्रुष्टिः सभराः। सभरा असत्। सभरा इति स—भराः। असन्न् नः। नो नेदीयः। नेदीय इत्। इथ् सृण्या᳚। सृण्या पक्वम्। पक्वमा। आऽयत्। अयदित्ययत्॥ लाङ्गलम् पवीरवम्। पवीरवꣳ सुशेवम्᳚। सुशेवꣳ सुमतित्थ्सरु। सुशेवमिति सु—शेवम्᳚। सुमतित्थ्सर्विति सुमति—थ्सरु॥ उदित्। इत् कृषति। कृषति गाम्। गामविम्᳚। अविम् प्रफर्व्यम्᳚। प्रफर्व्यम् च। प्रफर्व्यमिति प्र—फर्व्यम्᳚। च पीवरीम्। पीवरीमिति पीवरीम्॥ प्रस्थावद् रथवाहनम्। प्रस्थावदिति प्रस्थ—वत्। रथवाहनमिति रथ—वाहनम्॥ शुनम् नः। नः फाला᳚ः। फाला वि। वि तुदन्तु। तुदन्तु भूमिम्᳚। भूमिꣳ शुनम्। शुनम् कीनाशा᳚ः। कीनाशा अभि। अभि यन्तु। यन्तु वाहान्। वाहानिति वाहान्॥ शुनम् पर्जन्यः। पर्जन्यो मधुना। मधुना पयोभिः। पयोभिः शुनासीरा। पयोभिरिति पयः—भिः। शुनासीरा शुनम्। शुनमस्मासु। अस्मासु धत्तम्। धत्तमिति धत्तम्॥ कामम् कामदुघे। कामदुघे धुरुष्व। कामदुघ इति काम—दुघे। धुरुष्व मित्राय। मित्राय वरुणाय। वरुणाय च। चेति च॥ इन्द्रा-याग्नये᳚। अग्नये पूष्णे। पूष्ण ओषधीभ्यः। ओषधीभ्यः प्रजाभ्यः। ओषधीभ्य इत्योषधि—भ्यः। प्रजाभ्य इति प्र—जाभ्यः॥ घृतेन सीता᳚। सीता मधुना। मधुना समक्ता। समक्ता विश्वैः᳚। सम-क्तेति सम्—अक्ता। विश्वैर् देवैः᳚। देवैरनुमता। अनुमता मरुद्भिः᳚। अनुमतेत्यनु—मता। मरु-द्भिरिति मरुत्—भिः॥ ऊर्जस्वती पयसा। पयसा पिन्वमाना। पिन्वमानाऽस्मान्। अस्मान्थ् सीते। सीते पयसा। पयसा ऽभ्याववृथ्स्व। अभ्याववृथ्स्वेत्यभि—आववृथ्स्व॥ ॥ [२३] ॥

(समोकसौ विश्वरूपे विदुर्निरृतिं रभि चष्ट इह मित्राय द्वाविꣳशतिश्च) ॥ ५ ॥

या जाताः। जाता ओषधयः। ओषधयो देवेभ्यः। देवेभ्य स्त्रियुगम्। त्रियुगम् पुरा। त्रियु-गमिति त्रि—युगम्। पुरेति पुरा॥ मन्दामि बभ्रूणाम्᳚। बभ्रूणामहम्। अहꣳ शतम्। शतम् धामानि। धामानि सप्त। सप्त च। चेति च॥ शतव्ँवः। वो अम्ब। अम्ब धामानि। धामानि सहस्रम्᳚। सहस्रमुत। उत वः। वो रुहः। रुह इति रुहः॥ अथा शतक्रत्वः। शतक्रत्वो यूयम्। शतक्रत्व इति शत—क्रत्वः। यूयमिमम्। इमम् मे᳚। मे अगदम्। अगदम् कृत। कृतेति कृत॥

पुष्पावतीः प्रसूवतीः। पुष्पावतीरिति पुष्प—वतीः। प्रसूवतीः फलिनीः। प्रसूवतीरिति प्र—सूवतीः। फलिनीरफलाः। अफला उत। उतेत्युत॥ अश्वा इव। इव सजित्वरीः। सजित्वरीर् वीरुधः। सजित्वरीरिति स—जित्वरीः। वीरुधः पारयिष्णवः। पारयिष्णव इति पारयिष्णवः॥ ओषधीरिति। इति मातरः। मातरस्तत्। तद् वः। वो देवीः। देवीरुप। उप ब्रुवे। ब्रुव इति ब्रुवे॥ रपांसि विघ्नतीः। विघ्नतीरित। विघ्नतीरिति वि—घ्नतीः। इत रपः। रपश्चातयमानाः। ॥ [२४] ॥ चातयमाना इति चातयमानाः॥ अश्वत्थे वः। वो निषदनम्। निषदनम् पर्णे। निषदनमिति नि—सदनम्। पर्णे वः। वो वसतिः। वसतिः कृता। कृतेति कृता॥ गोभाज इत्। गोभाज इति गो—भाजः। इत् किल। किलासथ। असथ यत्। यथ् सनवथ। सनवथ पूरुषम्। पूरुषमिति पूरुषम्॥ यदहम्। अहव्वाजयन्न्। वाजयन्निमाः। इमा ओषधीः। ओषधीरहस्ते। हस्त आदधे। आदध इत्या—दधे॥ आत्मा यक्ष्मस्य। यक्ष्मस्य नश्यति। नश्यति पुरा। पुरा जीवगृभः। जीवगृभो यथा। जीवगृभ इति जीव—गृभः। यथेति यथा॥ यदोषधयः। ओषधयः सङ्गच्छन्ते। सङ्गच्छन्ते राजानः। सङ्गच्छन्त इति सम्—गच्छन्ते। राजानः समिताै। समिताविव। समिताविति सम्—इतौ। इवेतीव॥ विप्रः सः। स उच्यते। उच्यते भिषक्। भिषग् रक्षोहा। रक्षोहाऽमीवचातनः। रक्षोहेति रक्षः—हा। अमीवचातन इत्यमीव—चातनः॥ निष्कृतिर् नाम। निष्कृतिरिति निः—कृतिः। नाम वः। वो माता। माताऽथ। अथा यूयम्। यूयङ् स्थ। स्थ सङ्कृतीः। सङ्कृतीरिति सम्—कृतीः॥ सराः पतत्रिणीः। पतत्रिणीः स्थन। ॥ [२५] ॥ स्थन यत्। यदामयति। आमयति निः। निष्कृत। कृतेति कृत॥ अन्या वः। वो अन्याम्। अन्यामवतु। अवत्वन्या। अन्याऽन्यस्याः। अन्यस्या उप। उपावत। अव-तेत्यवत॥ ताः सर्वाः। सर्वा ओषधयः। ओषधयः संविदानाः। संविदाना इदम्। संविदाना इति सम्—विदानाः। इदम् मे। मे प्र। प्रावत। अवता वचः। वच इति वचः॥ उच्छुष्माः। शुष्मा ओषधीनाम्। ओषधीनाम् गावः। गावो गोष्ठात्। गोष्ठादिव। गोष्ठादिति गो—स्थात्। इवेरते। ईरत इतीरते॥ धनं सनिष्यन्तीनाम्। सनिष्यन्तीनामात्मानम्। आत्मानम् तव। तव पूरुष। पूरुषेति पूरुष॥ अति विश्वाः। विश्वाः परिष्ठाः। परिष्ठाः स्तेनः। परिष्ठा इति परि—स्थाः। स्तेन इव। इव व्रजम्। व्रजमक्रमुः। अक्रमुरित्यक्रमुः॥ ओषधयः प्र। प्राचुच्यवुः। अचुच्यवुर्

यत्। यत् किम्। किञ्च। च तनुवाम्। तनुवाꣳ रपः। रप इति रपः॥ यास्ते। ॥ [२६] ॥
त आतस्थुः। आतस्थुरात्मानम्। आतस्थुरित्या—तस्थुः। आत्मानय्ँयाः। या आविविशुः।
आविविशुः परुःपरुः। आविविशुरित्या—विविशुः। परुःपरुरिति परुः—परुः॥ तास्ते। ते
यक्ष्मम्। यक्ष्मव्विँ। वि बाधन्ताम्। बाधन्तामुग्रः। उग्रो मद्ध्यमशीः। मद्ध्यमशीरिव।
मद्ध्यमशीरिति मद्ध्यम—शीः। इवेतीव॥ साकय्ँयक्ष्म। यक्ष्म प्र। प्र पत। पत श्येनेन।
श्येनेन किकिदीविना। किकिदीविनेति किकिदीविना॥ साकव्वाँतस्य। वातस्य ध्राज्या। ध्राज्या
साकम्। साकम् नश्य। नश्य निहाकया। निहाकयेति नि—हाकया॥ अश्वावतीꣳ सोमवतीम्।
अश्वावतीमित्यश्व—वतीम्। सोमवतीमूर्जयन्तीम्। सोमवतीमिति सोम—वतीम्। ऊर्जयन्ती-
मुदोजसम्। उदोजसमित्युत्—ओजसम्॥ आ विथ्सि। विथ्सि सर्वाः। सर्वा ओषधीः। ओष-
धीरस्मै। अस्मा अरिष्टतातये। अरिष्टतातय इत्यरिष्ट—तातये॥ याः फलिनीः। फलिनीर् याः।
या अफलाः। अफला अपुष्पाः। अपुष्पा याः। याश्च। च पुष्पिणीः। पुष्पिणीरिति पुष्पिणीः॥
बृहस्पतिप्रसूतास्ताः। बृहस्पतिप्रसूता इति बृहस्पति—प्रसूताः। ता नः। नो मुञ्चन्तु। मुञ्चन्त्वꣳ-
हसः। अꣳहस इत्यꣳहसः॥ या ओषधयः। ॥ [२७] ॥ ओषधयः सोमराज्ञीः। सोमराज्ञीः
प्रविष्टाः। सोमराज्ञीरिति सोम—राज्ञीः। प्रविष्टाः पृथिवीम्। प्रविष्टा इति प्र—विष्टाः। पृथिवी-
मनु। अन्वित्यनु॥ तासाम् त्वम्। त्वमसि। अस्युत्तमा। उत्तमा प्र। उत्तमेत्युत्—तमा। प्र णः।
नो जीवातवे। जीवातवे सुव। सुवेति सुव॥ अवपतन्तीरवदन्न्। अवपतन्तीरित्यव—पतन्तीः।
अवदन् दिवः। दिव ओषधयः। ओषधयः परि। परीति परि॥ यम् जीवम्। जीवमश्नवामहै।
अश्नवामहै न। न सः। स रिष्याति। रिष्याति पूरुषः। पूरुष इति पूरुषः॥ याश्च। चेदम्।
इदमुपशृण्वन्ति। उपशृण्वन्ति याः। उपशृण्वन्तीत्युप—शृण्वन्ति। याश्च। च दूरम्। दूरम् परा-
गताः। परागता इति परा—गताः॥ इह सङ्गत्य। सङ्गत्य ताः। सङ्गत्येति सम्—गत्य।
ताः सर्वाः। सर्वा अस्मै। अस्मै सम्। सम् दत्त। दत्त भेषजम्। भेषजमिति भेषजम्॥ मा वः।
वो रिषत्। रिषत् खनिता। खनिता यस्मै। यस्मै च। चाहम्। अहम् खनामि। खनामि वः।
व इति वः॥ द्विपच्चतुष्पत्। द्विपदिति द्वि—पत्। चतुष्पदस्माकम्। चतुष्पदिति चतुः—पत्।
अस्माकꣳ सर्वम्। सर्वमस्तु। अस्त्वनातुरम्। अनातुरमित्यना—तुरम्॥ ओषधयः सम्। सव्वँ-

दन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥ यस्मै करोति। करोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तम्। तꣳ राजन्न्। राजन् पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि॥ ॥ [२८] ॥

(रपः पतत्रिणी र्या अꣳहसो याः खनामि वो ऽष्टादश च) ॥ ६ ॥

मा नः। नो हिꣳसीत्। हिꣳसीज् जनिता। जनिता यः। यः पृथिव्याः। पृथिव्या यः। यो वा। वा दिवम्। दिवꣳ सत्यधर्मा। सत्यधर्मा जजान। सत्यधर्मेति सत्य—धर्मा। जजानेति जजान॥ यश्च। चापः। अपश्चन्द्राः। चन्द्रा बृहतीः। बृहतीर् जजान। जजान कस्मै। कस्मै देवाय। देवाय हविषा। हविषा विधेम। विधेमेति विधेम॥ अभ्यावर्तस्व पृथिवि। अभ्यावर्त-स्वेत्यभि—आवर्तस्व। पृथिवि यज्ञेन। यज्ञेन पयसा। पयसा सह। सहेति सह॥ वपाम् ते। ते अग्निः। अग्निरिषितः। इषितोऽव। अव सर्पतु। सर्पत्विति सर्पतु॥ अग्ने यत्। यत् ते। ते शुक्रम्। शुक्रँय्यत्। यच् चन्द्रम्। चन्द्रँय्यत्। यत् पूतम्। पूतँय्यत्। यद् यज्ञियम्। यज्ञियमिति यज्ञियम्॥ तद् देवेभ्यः। देवेभ्यो भरामसि। भरामसीति भरामसि॥ इषमूर्जम्। ऊर्जमहम्। अहमितः। इत आ। आ ददे। ॥ [२९] ॥ दद् ऋतस्य। ऋतस्य धाम्नः। धाम्नो अमृतस्य। अमृतस्य योनेः। योनेरिति योनेः॥ आ नः। नो गोषु। गोषु विशतु। विशत्वा। औषधीषु। ओष-धीषु जहामि। जहामि सेदिम्। सेदिमनिराम्। अनिराममीवाम्। अमीवामित्यमीवाम्॥ अग्ने तव। तव श्रवः। श्रवो वयः। वयो महि। महि भ्राजन्ति। भ्राजन्त्यर्चयः। अर्चयो विभावसो। विभावसो इति विभा—वसो॥ बृहद्भानो शवसा। बृहद्भानो इति बृहत्—भानो। शवसा वाजम्। वाजमुक्थ्यम्। उक्थ्यम् दधासि। दधासि दाशुषे। दाशुषे कवे। कव इति कवे॥ इरज्यन्नग्ने। अग्ने प्रथयस्व। प्रथयस्व जन्तुभिः। जन्तुभिरस्मे। जन्तुभिरिति जन्तु—भिः। अस्मे रायः। अस्मे इत्यस्मे। रायो अमर्त्य। अमर्त्येत्यमर्त्य॥ स दर्शतस्य। दर्शतस्य वपुषः। वपुषो वि। वि राजसि। राजसि पृणक्षि। पृणक्षि सानसिम्। सानसिꣳ रयिम्। रयिमिति रयिम्॥ ऊर्जो नपात्। नपाज् जातवेदः। जातवेदः सुशस्तिभिः। जातवेद इति जात—वेदः। सुशस्तिभिर् मन्दस्व। सुशस्तिभिरिति सुशस्ति—भिः। मन्दस्व धीतिभिः। ॥ [३०] ॥ धीतिभिर् हितः। धीतिभिरिति धीति—भिः। हित इति हितः॥ त्वे इषः। त्वे इति त्वे। इषः सम्। सम् दधुः। दधुर्

भूरिरेतसः। भूरिरेतसश्चित्रोतयः। भूरिरेतस इति भूरि—रेतसः। चित्रोतयो वामजाताः। चित्रोतय इति चित्र—ऊतयः। वामजाता इति वाम—जाताः॥ पावकवर्चाः शुक्रवर्चाः। पावकवर्चा इति पावक—वर्चाः। शुक्रवर्चा अनूनवर्चाः। शुक्रवर्चा इति शुक्र—वर्चाः। अनूनवर्चा उत्। अनूनवर्चा इत्यनून—वर्चाः। उदियर्षि। इयर्षि भानुना। भानुनेति भानुना॥ पुत्रः पितरा। पितरा विचरन्न्। विचरन्नुप। विचरन्निति वि—चरन्न्। उपावसि। अवस्युभे। उभे पृणक्षि। उभे इत्युभे। पृणक्षि रोदसी। रोदसी इति रोदसी॥ ऋतावानम् महिषम्। ऋतावानमित्यृत—वानम्। महिषव्विँश्वचर्षणिम्। विश्वचर्षणिमग्निम्। विश्वचर्षणिमिति विश्व—चर्षणिम्। अग्निꣳ सुम्नाय। सुम्नाय दधिरे। दधिरे पुरः। पुरो जनाः। जना इति जनाः॥ श्रुत्कर्णꣳ सप्रथस्तमम्। श्रुत्कर्णमिति श्रुत्—कर्णम्। सप्रथस्तमम् त्वा। सप्रथस्तममिति सप्रथः—तमम्। त्वा गिरा। गिरा दैव्यम्। दैव्यम् मानुषा। मानुषा युगा। युगेति युगा॥ निष्कर्तारमद्ध्वरस्य। निष्कर्तारमिति निः—कर्तारम्। अद्ध्वरस्य प्रचेतसम्। प्रचेतसम् क्षयन्तम्। प्रचेतसमिति प्र—चेतसम्। क्षयन्तꣳ राधसे। राधसे महे। मह इति महे॥ रातिम् भृगूणाम्। भृगूणामुशिजम्। उशिजम् कविक्रतुम्। कविक्रतुम् पृणक्षि। कविक्रतुमिति कवि—क्रतुम्। पृणक्षि सानसिम्। सानसिꣳ रयिम्। ॥ [३१] ॥ रयिमिति रयिम्॥ चितः स्थ। स्थ परिचितः। परिचित ऊर्द्ध्वचितः। परिचित इति परि—चितः। ऊर्द्ध्वचितः श्रयद्ध्वम्। ऊर्द्ध्वचित इत्यूर्द्ध्व—चितः। श्रयद्ध्वम् तया। तया देवतया। देवतयाऽङ्गिरस्वत्। अङ्गिरस्वद् ध्रुवाः। ध्रुवाः सीदत। सीदतेति सीदत॥ आ प्यायस्व। प्यायस्व सम्। समेतु। एतु ते। ते विश्वतः। विश्वतः सोम। सोम वृष्णियम्। वृष्णियमिति वृष्णियम्॥ भवा वाजस्य। वाजस्य सङ्गथे। सङ्गथ इति सम्—गथे॥ सम् ते। ते पयाꣳसि। पयाꣳसि सम्। समु। उ यन्तु। यन्तु वाजाः। वाजाः सम्। सव्ँवृष्णियानि। वृष्णियान्यभिमातिषाहः। अभिमातिषाह इत्यभिमाति—साहः॥ आप्यायमानो अमृताय। आप्यायमान इत्या—प्यायमानः। अमृताय सोम। सोम दिवि। दिवि श्रवाꣳसि। श्रवाꣳस्युत्तमानि। उत्तमानि धिष्व। उत्तमानीत्युत्—तमानि। धिष्वेति धिष्व॥ ॥ [३२] ॥

(आ मन्दस्व सानसि मेकान्न चत्वारिꣳशच्च) ॥ ७ ॥

अभ्यस्थात्। अस्थाद् विश्वाः। विश्वाः पृतनाः। पृतना अरातीः। अरातीस्तत्। तदग्निः। अग्निराह। आह तत्। तदु। उ सोमः। सोम आह। आहेत्याह॥ बृहस्पतिः सविता। सविता तत्। तन् मे। म आह। आह पूषा। पूषा मा। माऽधात्। अधाथ् सुकृतस्य। सुकृतस्य लोके। सुकृतस्येति सु—कृतस्य। लोक इति लोके॥ यदक्रन्दः। अक्रन्दः प्रथमम्। प्रथमम् जायमानः। जायमान उद्यन्न्। उद्यन्थ् समुद्रात्। उद्यन्नित्युत्—यन्न्। समुद्रादुत। उत वा। वा पुरीषात्। पुरीषादिति पुरीषात्॥ श्येनस्य पक्षा। पक्षा हरिणस्य। हरिणस्य बाहू। बाहू उपस्तुतम्। बाहू इति बाहू। उपस्तुतम् जनिम। उपस्तुतमित्युप—स्तुतम्। जनिम तत्। तत् ते। ते अर्वन्न्। अर्वन्नित्यर्वन्न्॥ अपाम् पृष्ठम्। पृष्ठमसि। असि योनिः। योनिरग्नेः। अग्नेः समुद्रम्। समुद्रमभितः। अभितः पिन्वमानम्। पिन्वमानमिति पिन्वमानम्॥ वर्द्धमानम् महः। मह आ। ॥ [३३] ॥ आ च। च पुष्करम्। पुष्करम् दिवः। दिवो मात्रया। मात्रया वरिणा। वरिणा प्रथस्व। प्रथस्वेति प्रथस्व॥ ब्रह्म जज्ञानम्। जज्ञानम् प्रथमम्। प्रथमम् पुरस्तात्। पुरस्ताद् वि। वि सीमतः। सीमतः सुरुचः। सुरुचो वेनः। सुरुच इति सु—रुचः। वेन आवः। आव इत्यावः॥ ? स बुद्धियाः। बुद्धिया उपमाः। उपमा अस्य। उपमा इत्युप—माः। अस्य विष्ठाः। विष्ठाः सतः। विष्ठा इति वि—स्थाः। सतश्च। च योनिम्। योनिमसतः। असतश्च। च विवः। विव इति विवः॥ ?? हिरण्यगर्भः सम्। हिरण्यगर्भ इति हिरण्य—गर्भः। समवर्तत। अवर्तताग्रे। अग्रे भूतस्य। भूतस्य जातः। जातः पतिः। पतिरेकः। एक आसीत्। आसीदित्यासीत्॥ स दाधार। दाधार पृथिवीम्। पृथिवीम् द्याम्। द्यामुत। उतेमाम्। इमाम् कस्मै। कस्मै देवाय। देवाय हविषा। हविषा विधेम। विधेमेति विधेम॥ द्रप्सश्चस्कन्द। चस्कन्द पृथिवीम्। पृथिवीमनु। अनु द्याम्। ॥ [३४] ॥ द्यामिमम्। इमम् च। च योनिम्। योनिमनु। अनु यः। यश्च। च पूर्वः। पूर्व इति पूर्वः॥ तृतीयय्योनिम्। योनिमनु। अनु सञ्चरन्तम्। सञ्चरन्तम् द्रप्सम्। सञ्चरन्तमिति सम्—चरन्तम्। द्रप्सम् जुहोमि। जुहोम्यनु। अनु सप्त। सप्त होत्राः। होत्रा इति होत्राः॥ नमो अस्तु। अस्तु सर्पेभ्यः। सर्पेभ्यो ये। ये के। के च। च पृथिवीम्। पृथिवीमनु। अन्वित्यनु॥ ये अन्तरिक्षे। अन्तरिक्षे ये। ये दिवि। दिवि तेभ्यः।

तेभ्यः सर्पेभ्यः। सर्पेभ्यो नमः। नम इति नमः॥ येऽदः। अदो रोचने। रोचने दिवः। दिवो ये। ये वा। वा सूर्यस्य। सूर्यस्य रश्मिषु। रश्मिष्विति रश्मिषु॥ येषामप्सु। अप्सु सदः। अप्स्वित्यप्—सु। सदः कृतम्। कृतम् तेभ्यः। तेभ्यः सर्पेभ्यः। सर्पेभ्यो नमः। नम इति नमः॥ या इषवः। इषवो यातुधानानाम्। यातुधानानाय्ँये। यातुधानानामिति यातु—धानानाम्। ये वा। वा वनस्पतीन्। वनस्पतीꣳरनु। अन्वित्यनु॥ ये वा। वाऽवटेषु। अवटेषु शेरते। शेरते तेभ्यः। तेभ्यः सर्पेभ्यः। सर्पेभ्यो नमः। नम इति नमः॥ ॥ [३५] ॥

(महो ऽनु यातुधाना मेकादश च) ॥ ८ ॥

ध्रुवाऽसि। असि धरुणा। धरुणा ऽस्तृता। अस्तृता विश्वकर्मणा। विश्वकर्मणा सुकृता। विश्वकर्मणेति विश्व—कर्मणा। सुकृतेति सु—कृता॥ मा त्वा। त्वा समुद्रः। समुद्र उत्। उद् वधीत्। वधीन् मा। मा सुपर्णः। सुपर्णो ऽव्यथमाना। सुपर्ण इति सु—पर्णः। अव्यथमाना पृथिवीम्। पृथिवीम् दृꣳह। दृꣳहेति दृꣳह॥ प्रजापतिस्त्वा। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। त्वा सादयतु। सादयतु पृथिव्याः। पृथिव्याः पृष्ठे। पृष्ठे व्यचस्वतीम्। व्यचस्वतीम् प्रथस्वतीम्। प्रथस्वतीम् प्रथः। प्रथोऽसि। असि पृथिवी। पृथिव्यसि। असि भूः। भूरसि। असि भूमिः। भूमिरसि। अस्यदितिः। अदितिरसि। असि विश्वधायाः। विश्वधाया विश्वस्य। विश्वधाया इति विश्व—धायाः। विश्वस्य भुवनस्य। भुवनस्य धर्त्री। धर्त्री पृथिवीम्। पृथिवीय्ँयच्छ। यच्छ पृथिवीम्। पृथिवीम् दृꣳह। दृꣳह पृथिवीम्। पृथिवीम् मा। मा हिꣳसीः। हिꣳसीर् विश्वस्मै। विश्वस्मै प्राणाय। प्राणायापानाय। प्राणायेति प्र—अनाय। अपानाय व्यानाय। अपानायेत्यप—अनाय। व्यानायोदानाय। व्यानायेति वि—अनाय। उदानाय प्रतिष्ठायै। उदानायेत्युत्—अनाय। प्रतिष्ठायै चरित्राय। प्रतिष्ठाया इति प्रति—स्थायै। ॥ [३६] ॥ चरित्रायाग्निः। अग्निस्त्वा। त्वाऽभि। अभि पातु। पातु मह्या। मह्या स्वस्त्या। स्वस्त्या छर्दिषा। छर्दिषा शन्तमेन। शन्तमेन तया। शन्तमेनेति शम्—तमेन। तया देवतया। देवतया ऽङ्गिरस्वत्। अङ्गिरस्वद् ध्रुवा। ध्रुवा सीद। सीदेति सीद॥ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती। काण्डात्काण्डादिति काण्डात्—काण्डात्। प्ररोहन्ती परुषःपरुषः। प्ररोहन्तीति प्र—रोहन्ती। परुषःपरुषः

परि। परुषःपरुष इति परुषः—परुषः। परीति परि॥ एवा नः। नो दूर्वे। दूर्वे प्र। प्र तनु। तनु सहस्रेण। सहस्रेण शतेन। शतेन च। चेति च॥ या शतेन। शतेन प्रतनोषि। प्रतनोषि सहस्रेण। प्रतनोषीति प्र—तनोषि। सहस्रेण विरोहसि। विरोहसीति वि—रोहसि॥ तस्यास्ते। ते देवि। देवीष्टके। इष्टके विधेम। विधेम हविषा। हविषा वयम्। वयमिति वयम्॥ अषाढाऽसि। असि सहमाना। सहमाना सहस्व। सहस्वारातीः। अरातीः सहस्व। सहस्वारातीयतः। अरातीयतः सहस्व। सहस्व पृतनाः। पृतनाः सहस्व। सहस्व पृतन्यतः। पृतन्यत इति पृतन्यतः॥ सहस्र-वीर्याऽसि। सहस्रवीर्येति सहस्र—वीर्या। ॥ [३७] ॥ असि सा। सा मा। मा जिन्व। जिन्वेति जिन्व॥ मधु वाताः। वाता ऋतायते। ऋतायते मधु। ऋतायत इत्यृत—यते। मधु क्षरन्ति। क्षरन्ति सिन्धवः। सिन्धव इति सिन्धवः॥ माद्ध्वीर् नः। नः सन्तु। सन्त्वोषधीः। ओषधी-रित्योषधीः॥ मधु नक्तम्। नक्तमुत। उतोषसि। उषसि मधुमत्। मधुमत् पार्थिवम्। मधुमदिति मधु—मत्। पार्थिवꣳ रजः। रज इति रजः॥ मधु द्यौः। द्यौरस्तु। अस्तु नः। नः पिता। पितेति पिता॥ मधुमान् नः। मधुमानिति मधु—मान्। नो वनस्पतिः। वनस्पतिर् मधुमान्। मधुमाꣳ अस्तु। मधुमानिति मधु—मान्। अस्तु सूर्यः। सूर्य इति सूर्यः॥ माद्ध्वीर् गावः। गावो भवन्तु। भवन्तु नः। न इति नः॥ मही द्यौः। द्यौः पृथिवी। पृथिवी च। च नः। न इमम्। इमँय्यँज्ञम्। यज्ञम् मिमिक्षताम्। मिमिक्षतामिति मिमिक्षताम्॥ पिपृताम् नः। नो भरीमभिः। भरीम-भिरिति भरीम—भिः॥ तद् विष्णोः। विष्णोः परमम्। परमम् पदम्। ॥ [३८] ॥ पदꣳ सदा। सदा पश्यन्ति। पश्यन्ति सूरयः। सूरय इति सूरयः॥ दिवीव। इव चक्षुः। चक्षुराततम्। आततमित्या—ततम्॥ ध्रुवाऽसि। असि पृथिवि। पृथिवि सहस्व। सहस्व पृतन्यतः। पृतन्यत इति पृतन्यतः॥ ? स्यूता देवेभिः। देवेभिरमृतेन। अमृतेना। आऽगाः। अगा इत्यगाः॥ या स्ते। ते अग्ने। अग्ने सूर्ये। सूर्ये रुचः। रुच उद्यतः। उद्यतो दिवम्। उद्यत इत्युत्—यतः। दिवमातन्वन्ति। आतन्वन्ति रश्मिभिः। आतन्वन्तीत्या—तन्वन्ति। रश्मिभिरिति रश्मि—भिः॥ ताभिः सर्वाभिः। सर्वाभी रुचे। रुचे जनाय। जनाय नः। नस्कृधि। कृधीति कृधि॥ या वः। वो देवाः। देवाः सूर्ये। सूर्ये रुचः। रुचो गोषु। गोष्वश्वेषु। अश्वेषु याः। या रुचः। रुच इति रुचः॥ इन्द्राग्नी ताभिः। इन्द्राग्नी इतीन्द्र—अग्नी। ताभिः सर्वाभिः। सर्वाभी रुचम्।

रुचम् नः। नो धत्त। धत्त बृहस्पते। बृहस्पत इति बृहस्पते॥ विराड् ज्योतिः। विराडिति वि—राट्। ॥ [३९] ॥ ज्योतिरधारयत्। अधारयथ् सम्राट्। सम्राड् ज्योतिः। सम्राडिति सम्—राट्। ज्योतिरधारयत्। अधारयथ् स्वराट्। स्वराड् ज्योतिः। स्वराडिति स्व—राट्। ज्योतिरधारयत्। अधारयदित्यधारयत्॥ अग्ने युख्व। युख्वा हि। हि ये। ये तव। तवाश्वासः। अश्वासो देव। देव साधवः। साधव इति साधवः॥ अरँव्वहन्ति। वहन्त्याशवः। आशव इत्याशवः॥ युख्वा हि। हि देवहूतमान्। देवहूतमाꣳ अश्वान्। देवहूतमानिति देव—हूतमान्। अश्वाꣳ अग्ने। अग्ने रथीः। रथीरिव। इवेतीव॥ नि होता। होता पूर्व्यः। पूर्व्यः सदः। सद इति सदः॥ द्रप्सश्चस्कन्द। चस्कन्द पृथिवीम्। पृथिवीमनु। अनु द्याम्। द्यामिमम्। इमम् च। च योनिम्। योनिमनु। अनु यः। यश्च। च पूर्वः। पूर्व इति पूर्वः॥ तृतीयँय्योनिम्। योनिमनु। अनु सञ्चरन्तम्। सञ्चरन्तम् द्रप्सम्। सञ्चरन्तमिति सम्—चरन्तम्। द्रप्सम् जुहोमि। जुहोम्यनु। अनु सप्त। सप्त होत्राः। ॥ [४०] ॥ होत्रा इति होत्राः॥ अभूदिदम्। इदव्विँश्वस्य। विश्वस्य भुवनस्य। भुवनस्य वाजिनम्। वाजिनमग्नेः। अग्नेर् वैश्वानरस्य। वैश्वानरस्य च। चेति च॥ अग्निर् ज्योतिषा। ज्योतिषा ज्योतिष्मान्। ज्योतिष्मान् रुक्मः। रुक्मो वर्चसा। वर्चसा वर्चस्वान्। वर्चस्वानिति वर्चस्वान्॥ ऋचे त्वा। त्वा रुचे। रुचे त्वा। त्वा सम्। समित्। इथ् स्रवन्ति। स्रवन्ति सरितः। सरितो न। न धेनाः। धेना इति धेनाः॥ अन्तर्हृदा। हृदा मनसा। मनसा पूयमानाः। पूयमाना इति पूयमानाः॥ घृतस्य धाराः। धारा अभि। अभि चाकशीमि। चाकशीमीति चाकशीमि॥ हिरण्ययो वेतसः। वेतसो मद्ध्ये। मद्ध्य आसाम्। आसामित्यासाम्॥ तस्मिन्थ् सुपर्णः। सुपर्णो मधुकृत्। सुपर्ण इति सु—पर्णः। मधुकृत् कुलायी। मधुकृदिति मधु—कृत्। कुलायी भजन्न्। भजन्नास्ते। आस्ते मधु। मधु देवताभ्यः। देवताभ्य इति देवताभ्यः॥ तस्यासते। आसते हरयः। हरयः सप्त। सप्त तीरे। तीरे स्वधाम्। स्वधाम् दुहानाः। स्वधामिति स्व—धाम्। दुहाना अमृतस्य। अमृतस्य धाराम्। धारामिति धाराम्॥ ॥ [४१] ॥

((प्रतिष्ठायै सहस्रवीर्या परमं विराट्थ् सप्त तीरे चत्वारि च)) ॥ ९ ॥

आ॒दि॒त्यम् गर्भ᳚म्। गर्भ॑म् पय॑सा। पय॑सा सम॒ञ्जन्न्। स॒म॒ञ्जन्थ् स॒ह॒स्रस्य॑। स॒म॒ञ्जन्निति॑ सं—अ॒ञ्जन्न्। स॒ह॒स्रस्य॑ प्र॒ति॒माम्। प्र॒ति॒माँ॑व्विँ॒श्वरू॑पम्। प्र॒ति॒मामिति॑ प्रति—माम्। वि॒श्वरू॑प॒मिति॑ वि॒श्व—रू॒प॒म्॥ परि॑ वृ॒ङ्ग्धि। वृ॒ङ्ग्धि॒ हर॑सा। हर॑सा॒ मा। माऽभि। अ॒भि मृ॑क्षः। मृ॒क्षः॒ श॒तायु॑षम्। श॒तायु॑षम् कृणुहि। श॒तायु॑ष॒मिति॑ श॒त—आ॒यु॒ष॒म्। कृ॒णु॒हि॒ ची॒यमा॑नः। ची॒यमा॑न॒ इति॑ ची॒यमा॑नः॥ इ॒मम् मा। मा हिꣳ॑सीः। हि॒ꣳ॒सी॒र् द्वि॒पाद᳚म्। द्वि॒पाद॑म् प॒शू॒नाम्। द्वि॒पाद्मिति॑ द्वि—पाद᳚म्। प॒शू॒नाꣳ स॒ह॑स्राक्ष। स॒ह॑स्राक्ष॒ मेधे᳚। स॒ह॑स्राक्षेति॒ स॒ह॑स्र—अ॒क्ष। मेध॒ आ। आ ची॒यमा॑नः। ची॒यमा॑न॒ इति॑ ची॒यमा॑नः॥ म॒युमा॑र॒ण्यम्। आ॒र॒ण्यमनु॑। अनु॑ ते। ते॒ दि॒शा॒मि॒। दि॒शा॒मि॒ तेन॑। तेन॑ चिन्वा॒नः। चि॒न्वा॒नस्त॒नुव॑ः। त॒नुवो॒ नि। नि षी॑द। सी॒देति॑ सीद॥ वात॑स्य ध्राजि᳚म्। ध्राजिँ॒व्वरु॑णस्य। वरु॑णस्य॒ नाभि᳚म्। नाभि॑मश्व᳚म्। अश्व॑म् ज॒ज्ञानम्। ज॒ज्ञानꣳ॑ स॑रि॒रस्य॑। स॒रि॒रस्य॒ मद्ध्ये᳚। मद्ध्य॒ इति॒ मद्ध्ये᳚॥ शिशु॑म् न॒दीना᳚म्। न॒दीनाꣳ॒ हरि॑म्। हरि॑मद्रि॑बुद्धम्। अद्रि॑बुद्धमग्ने᳚। अद्रि॑बु॒द्ध॒मित्यद्रि॑—बु॒द्ध॒म्। अग्ने॒ मा। मा हिꣳ॑सीः। हि॒ꣳ॒सी॒ः प॒र॒मे। ॥ [४२] ॥ प॒र॒मे व्यो॑मन्न्। व्यो॑म॒न्निति॒ वि—ओ॒म॒न्न्॥ इ॒मम् मा। मा हिꣳ॑सीः। हि॒ꣳ॒सी॒रेक॑शफम्। एक॑शफम् प॒शू॒नाम्। एक॑श॒फ॒मित्येक॑—श॒फ॒म्। प॒शू॒नाम् क॑निक्रदम्। क॒नि॒क्र॒दँ॒व्वाजिन᳚म्। वा॒जि॒नँ॒व्वाजि॑नेषु। वा॒जि॑ने॒ष्विति॒ वाजि॑नेषु॥ गौ॒रमा॑र॒ण्यम्। आ॒र॒ण्यमनु॑। अनु॑ ते। ते॒ दि॒शा॒मि॒। दि॒शा॒मि॒ तेन॑। तेन॑ चिन्वा॒नः। चि॒न्वा॒न स्त॒नुव॑ः। त॒नुवो॒ नि। नि षी॑द। सी॒देति॑ सीद॥ अज॑स्र॒मिन्दु᳚म्। इन्दु॑मरु॒षम्। अ॒रु॒षम् भु॑र॒ण्युम्। भु॒र॒ण्यु॒मग्निम्। अ॒ग्निमी॑डे। ई॒डे॒ पूर्व॑चित्तौ। पू॒र्वचि॑त्तौ॒ नमो॑भिः। पू॒र्वचि॑त्ता॒विति॑ पू॒र्व—चि॒त्तौ॒। नमो॑भि॒रिति॒ नम॑ः—भि॒ः॥ स पर्व॑भिः। पर्व॑भिर्ऋ॒तु॒शः। पर्व॑भि॒रिति॒ पर्व॑—भि॒ः। ऋ॒तु॒शः कल्प॑मानः। ऋ॒तु॒श इत्यृ॒तु—श॒ः। कल्प॑मानो॒ गाम्। गाम् मा। मा हिꣳ॑सीः। हि॒ꣳ॒सी॒रदि॑तिम्। अदि॑तिँ॒व्विराज᳚म्। वि॒राज॒मिति॑ वि—राज᳚म्॥ इ॒मꣳ स॑मु॒द्रम्। स॒मु॒द्रꣳ श॒तधा॑रम्। श॒तधा॑र॒मुथ्स᳚म्। श॒तधा॑र॒मिति॑ श॒त—धा॒र॒म्। उथ्स॑व्व्य॒च्यमा॑नम्। व्य॒च्यमा॑नम् भुव॑नस्य। व्य॒च्यमा॑न॒मिति॑ वि—अ॒च्यमा॑नम्। भुव॑नस्य॒ मद्ध्ये᳚। मद्ध्य॒ इ॒ति॒ मद्ध्ये᳚॥ घृ॒तम् दुहा॑नाम्। दुहा॑ना॒मदि॑तिम्। अदि॑तिम् जना॑य। जना॑याग्ने᳚। अग्ने॒ मा। मा हिꣳ॑सीः। ॥ [४३] ॥ हि॒ꣳ॒सी॒ः प॒र॒मे। प॒र॒मे व्यो॑मन्न्। व्यो॑म॒न्निति॒ वि—ओ॒म॒न्न्॥ ग॒व॒यमा॑र॒ण्यम्। आ॒र॒ण्यमनु॑। अनु॑ ते। ते॒ दि॒शा॒मि॒। दि॒शा॒मि॒ तेन॑। तेन॑ चिन्वा॒नः। चि॒न्वा॒नस्त॒नुव॑ः।

तनुवो नि। नि षीद। सीदेति सीद॥ वरूत्रिम् त्वष्टुः। त्वष्टुर् वरुणस्य। वरुणस्य नाभिम्। नाभिमविम्। अविम् जज्ञानाम्। जज्ञानाꣳ रजसः। रजसः परस्मात्। परस्मादिति परस्मात्॥ महीꣳ साहस्रीम्। साहस्रीमसुरस्य। असुरस्य मायाम्। मायामग्ने। अग्ने मा। मा हिꣳसीः। हिꣳसीः परमे। परमे व्योमन्न्। व्योमन्निति वि—ओमन्न्॥ इमामूर्णायुम्। ऊर्णायुँव्वरुणस्य। वरुणस्य मायाम्। मायाम् त्वचम्। त्वचम् पशूनाम्। पशूनाम् द्विपदाम्। द्विपदाम् चतुष्पदाम्। द्विपदामिति द्वि—पदाम्। चतुष्पदामिति चतुः—पदाम्॥ त्वष्टुः प्रजानाम्। प्रजानाम् प्रथमम्। प्रजानामिति प्र—जानाम्। प्रथमम् जनित्रम्। जनित्रमग्ने। अग्ने मा। मा हिꣳसीः। हिꣳसीः परमे। परमे व्योमन्न्। व्योमन्निति वि—ओमन्न्॥ उष्ट्रमारण्यम्। आरण्यमनु। अनु ते। ॥ [४४] ॥ ते दिशामि। दिशामि तेन। तेन चिन्वानः। चिन्वानस्तनुवः। तनुवो नि। नि षीद। सीदेति सीद॥ यो अग्निः। अग्निरग्नेः। अग्ने स्तपसः। तपसोऽधि। अधि जातः। जातः शोचात्। शोचात् पृथिव्याः। पृथिव्या उत। उत वा। वा दिवः। दिवस्परि। परीति परि॥ येन प्रजाः। प्रजा विश्वकर्मा। प्रजा इति प्र—जाः। विश्वकर्मा व्यानट्। विश्वकर्मेति विश्व—कर्मा। व्यानट् तम्। व्यानडिति वि—आनट्। तमग्ने। अग्ने हेडः। हेडः परि। परि ते। ते वृणक्तु। वृणक्त्विति वृणक्तु॥ अजा हि। ह्यग्नेः। अग्नेरजनिष्ट। अजनिष्ट गर्भात्। गर्भाथ् सा। सा वै। वा अपश्यत्। अपश्यज् जनितारम्। जनितारमग्रे। अग्र इत्यग्रे॥ तया रोहम्। रोहमायन्न्। आयन्नुप। उप मेद्ध्यासः। मेद्ध्यासस्तया। तया देवाः। देवा देवताम्। देवतामग्रे। अग्र आयन्न्। आयन्नित्यायन्न्॥ शरभमारण्यम्। आरण्यमनु। अनु ते। ते दिशामि। दिशामि तेन। तेन चिन्वानः। चिन्वान स्तनुवः। तनुवो नि। नि षीद। सीदेति सीद॥ ॥ [४५] ॥

(अग्ने मा हिꣳसी रग्ने मोष्ट्रमा रण्यमनु शरभम् नव च) ॥ १० ॥

इन्द्राग्नी रोचना। इन्द्राग्नी इतीन्द्र—अग्नी। रोचना दिवः। दिवः परि। परि वाजेषु। वाजेषु भूषथः। भूषथ इति भूषथः॥ तद् वाम्। वां चेति। चेति प्र। प्र वीर्यम्। वीर्यमिति वीर्यम्॥ श्नथद् वृत्रम्। वृत्रमुत। उत सनोति। सनोति वाजम्। वाजमिन्द्रा। इन्द्रा यः। यो अग्नी। अग्नी सहुरी। अग्नी इत्यग्नी। सहुरी सपर्यात्। सहुरी इति स—हुरी। सपर्यादिति सपर्यात्॥

इरज्यन्ता वसव्यस्य। वसव्यस्य भूरेः। भूरेः सहस्तमा। सहस्तमा सहसा। सहस्तमेति सहः—
तमा। सहसा वाजयन्ता। वाजयन्तेति वाज—यन्ता॥ प्र चर्षणिभ्यः। चर्षणिभ्यः पृतना।
चर्षणिभ्य इति चर्षणि—भ्यः। पृतना हवेषु। हवेषु प्र। प्र पृथिव्याः। पृथिव्या रिरिचाथे। रिरि-
चाथे दिवः। रिरिचाथे इति रिरिचाथे। दिवश्च। चेति च॥ प्र सिन्धुभ्यः। सिन्धुभ्यः प्र। सिन्धुभ्य
इति सिन्धु—भ्यः। प्र गिरिभ्यः। गिरिभ्यो महित्वा। गिरिभ्य इति गिरि—भ्यः। महित्वा प्र।
महित्वेति महि—त्वा। प्रेन्द्राग्नी। इन्द्राग्नी विश्वा। इन्द्राग्नी इतीन्द्र—अग्नी। विश्वा भुवना। भुव-
नाऽति। अत्यन्या। अन्येत्यन्या॥ मरुतो यस्य। यस्य हि। हि क्षये। ॥ [४६] ॥ क्षये
पाथ। पाथा दिवः। दिवो विमहसः। विमहस इति वि—महसः॥ स सुगोपातमः। सुगोपातमो
जनः। सुगोपातम इति सुगोप—तमः। जन इति जनः॥ यज्ञैर् वा। वा यज्ञवाहसः। यज्ञवाहसो
विप्रस्य। यज्ञवाहस इति यज्ञ—वाहसः। विप्रस्य वा। वा मतीनाम्। मतीनामिति मतीनाम्॥
मरुतः शृणुत। शृणुता हवम्। हवमिति हवम्॥ श्रियसे कम्। कम् भानुभिः। भानुभिः सम्।
भानुभिरिति भानु—भिः। सम् मिमिक्षिरे। मिमिक्षिरे ते। ते रश्मिभिः। रश्मिभिस्ते। रश्मि-
भिरिति रश्मि—भिः। त ऋक्वभिः। ऋक्वभिः सुखादयः। ऋक्वभिरित्यृक्व—भिः। सुखादय इति
सु—खादयः॥ ते वाशीमन्तः। वाशीमन्त इष्मिणः। वाशीमन्त इति वाशि—मन्तः। इष्मिणो
अभीरवः। अभीरवो विद्रे। विद्रे प्रियस्य। प्रियस्य मारुतस्य। मारुतस्य धाम्नः। धाम्न इति
धाम्नः॥ अव ते। ते हेडः। हेड उत्। उदुत्तमम्। उत्तममित्युत्—तमम्॥ कया नः। नश्चित्रः।
चित्र आ। आ भुवत्। भुवदूती। ऊती सदावृधः। सदावृधः सखा। सदावृध इति सदा—वृधः।
सखेति सखा॥ ? कया शचिष्ठया। शचिष्ठया वृता। वृतेति वृता॥ ॥ [४७] ॥ को अद्य।
अद्य युङ्क्ते। युङ्क्ते धुरि। धुरि गाः। गा ऋतस्य। ऋतस्य शिमीवतः। शिमीवतो भामिनः।
भामिनो दुर्हृणायून्। दुर्हृणायूनिति दुः—हृणायून्॥ आसन्निषून् हृथ्स्वसः। आसन्निषूनि-
त्यासन्—इषून्। हृथ्स्वसो मयोभून्। हृथ्स्वस इति हृथ्सु—असः। मयोभूनयः। मयोभूनिति
मयः—भून्। य एषाम्। एषाम् भृत्याम्। भृत्यामृणधत्। ऋणधथ् सः। स जीवात्। जीवादिति
जीवात्॥ अग्ने नय। नया। आ देवानाम्। देवानाꣳ शम्। शम् नः। नो भवन्तु। भवन्तु वाजे-
वाजे। वाजेवाज इति वाजे—वाजे॥ अफ्स्वग्ने। अफ्स्वित्यप्—सु। अग्ने सधिः। सधिष्टव। तव

सः। सौषधीः। ओषधीरनु। अनु रुद्ध्यसे। रुद्ध्यस इति रुद्ध्यसे॥ गर्भे सन्न्। सन् जायसे। जायसे पुनः। पुनरिति पुनः॥ वृषा सोम। सोम द्युमान्। द्युमाꣳ असि। द्युमानिति द्यु—मान्। असि वृषा। वृषा देव। देव वृषव्रतः। वृषव्रत इति वृष—व्रतः॥ वृषा धर्माणि। धर्माणि दधिषे। दधिष इति दधिषे॥ इमम् मे। मे वरुण। वरुण तत्। तत् त्वा। त्वा यामि। यामि त्वम्। त्वम् नः। नो अग्ने। अग्ने सः। स त्वम्। त्वम् नः। नो अग्ने। अग्ने इत्यग्ने॥ ॥ [४८] ॥

(हि वृता म एकादश च) ॥ ११ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

चतुर्थकाण्डे द्वितीयः प्रश्नः — क्रम पाठः — समाप्तः

अनुवाकाः	पञ्चशत्यः
११	४८

ॐ